क्या आप जानते हैं?

सुंदरबन विश्व का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है और लुप्तप्राय रॉयल बंगाल बाघ का आश्रय-स्थल है. यह यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर स्थल भी है.

१. बृहन्मुम्बई में ४८६५ हेक्टेर में मैंग्रोव वन फैले हुए हैं और उनकी करीब ११ प्रजातियाँ यहाँ पर पाई जाती हैं.

२. मैंग्रोव तटीय क्षेत्रों के खारे पानी में उगनेवाली खास वनस्पति है जिनमें नमक को सहने की क्षमता होती है. यह अंतर्ज्वारीय (ज्वार और भाटे के बीच के) क्षेत्रों में उगती है.

३. मैंग्रोव शब्द पुर्तगाली के 'मैंग' से उद्धृत है जिसका अर्थ है 'वनस्पतियों का संग्रह या जमावड़ा' जो कि आगे जाकर 'मैंग्रो' और फिर 'मैंग्रोव' में बदल गया.

नमक के कण

४. असली मैंग्रोवों में विशेष श्वसन जड़ें होती हैं जो कि उन्हें दलदली क्षेत्रों में साँस लेने में मदद करती हैं. पत्तियों पर स्थित विशेष ग्रंथियाँ उन्हें अतिरिक्त नमक हटाने में सहायता करती हैं.

जड़ों के प्रकार

नुकीली जड़ें

शंक्वाकार जड़ें

घुटने के जैसी जड़ें

अवस्तभ जड़ें

५. मैंग्रोव के अलावा अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों में अन्य वनस्पतियाँ भी उगती हैं जिनमें मध्यम खारापन को सहने की क्षमता होती है पर उनमें विशेष जड़ें एवं पत्तियाँ नहीं होतीं. इन्हें 'साथी मैंग्रोव' कहते हैं.

६. मैंग्रोवों की विभिन्न प्रजातियों को समुद्र से निकटता के आधार पर समुद्राभिमुख, मध्यवर्ती एवं भूमि भिमुख प्रजातियों में वर्गीकृत किया गया है.

७. कुछ मैंग्रोवों में नई अंकुरण क्रिया,फलों के गिरने से पहले ही प्रारम्भ हो जाती है.

८. वे किनारी क्षेत्रों की मिट्टी को बहने से रोकते हैं और भूमि का स्तर कायम रखते हैं. वे लहर, वायु अवरोधक एवं बाढ़ के प्रभाव को भी कम करते हैं.

९. कई समुद्री जानवरों को आहार, आश्रय एवं प्रजनन क्षेत्र प्रदान करते हैं. वायु एवं जल की शुध्दीकरन एवं कार्बनसिंक (भन्डार) के रूप में कार्य करते हैं.

१०. मछुआरा समुदायों को अन्न, ईंधन एवं सागरी पर्यटन के अवसर भी प्रदान करते हैं.

यहाँ १० मैंग्रोव प्रजातियों की सूची दी गई है. लाल चिन्ह से दर्शाई गई प्रजातियाँ अपना आवास नष्ट होने से खतरे में हैं इसीलिए उनका नाम आई.यू.सी.एन की लाल सूची में है.

फलने-फूलने का समय | ऊँचाइ | सदाबहार वृक्ष

सदाबहार झाड़ी | बेल | LEAST CONCERN LC आईयूसीएन लाल सूची

मैंग्रोवों को जानिये

वृक्ष

१. हलसी (एजेनिकस कॉर्निकुलैटम)

ये मध्यवर्ती मैंग्रोव जो कि खाड़ियों के अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों में आमतौर पर पाए जाते हैं. इनकी विशिष्ट अवस्तम्भ जड़ें होती हैं. फूलों का परागण मधुमक्खियों द्वारा होता है, इसीलिए यह शहद के स्रोत होते हैं. इनका उपयोग सब्जी, औषधि, रंग एवं मछली के जहर के रूप में होता है.

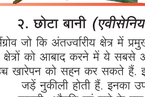

LEAST CONCERN LC | ६ मी. | अप्रैल-सितम्बर

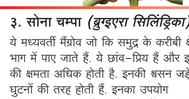

२. छोटा बानी (एवीसेनिया मरीना)

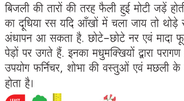

ये मध्यवर्ती मैंग्रोव जो कि अंतर्ज्वारीय क्षेत्र में प्रमुखता से पाए जाते हैं. नए क्षेत्रों को आबाद करने में ये सबसे आगे होते हैं. ये छांव एवं उच्च खारेपन को सहन कर सकते हैं. इनकी श्वसन जड़ें नुकीली होती हैं. इनका उपयोग ईंधन, लकड़ी, औषधि एवं चारे के रूप में होता है. इनके फल खाने योग्य होते हैं. मैंग्रोव पतंगे का यह खाद्य पौधा है.

LEAST CONCERN LC | २-५ मी. | मई-जुलाई

३. सोना चम्पा (ब्रुगइएरा सिलिंड्रिका)

ये मध्यवर्ती मैंग्रोव जो कि समुद्र के करीबी क्षेत्रों के मध्य भाग में पाए जाते हैं. ये छांव-प्रिय हैं और इनमें पुनर्जनन की क्षमता अधिक होती है. इनकी श्वसन जड़ें घुटनों की तरह होती हैं. इनका उपयोग ईंधन, लकड़ी एवं औषधि के रूप में होता है.

LEAST CONCERN LC | २० मी. | मई- अगस्त

४. कांकरा (ब्रुगइएरा जिमनोरिजा)

ये मध्यवर्ती मुहाने क्षेत्र में समुद्र की ओर बढ़नेवाले समुद्राभिमुख मैंग्रोव हैं. ये छांव-प्रिय, धीमी गति से बढ़ने वाले मैंग्रोव हैं. उच्च खारेपन के प्रति कम सहनशील होते हैं. इनका उपयोग लकड़ी और ईंधन के रूप में होता है. इनकी श्वसन जड़ें घुटनों की तरह होती हैं. इनके फल खाने योग्य होते हैं.

LEAST CONCERN LC | ८-१२ मी. | जनवरी-दिसम्बर

५. तेजबाला (एक्सोकेरिया एग्रोचा)

ये भूमिभिमुख मैंग्रोव हैं जो अक्सर खुले क्षेत्रों का अतिक्रमण करते हैं एवं समस्याग्रस्त क्षेत्रों के प्रति भी सहनशील होते हैं. इनकी बिजली की तारों की तरह फैली हुई मोटी जड़ें होती हैं. पत्तियों का दूधिया रस यदि आँखों में चला जाय तो थोड़े समय के लिए अंधापन आ सकता है. छोटे-छोटे नर एवं मादा फूल अलग-अलग पेड़ों पर उगते हैं. इनका मधुमक्खियों द्वारा परागण होता है. इनका उपयोग फर्निचर, शोभा की वस्तुओं एवं मछली के जहर के लिए होता है।

LEAST CONCERN LC | १५ मी. | मार्च-जुलाई

६. गर्जन (राइजोफोरा एपीक्युलाटा)

ये मध्यवर्ती जो कि अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों में उगते हैं. ये सहनशील, शीघ्र उगने वाली प्रजाति है. इनका उपयोग औषधी, ईंधन, लकड़ी, चारा एवं रंग के लिए होता है. इनकी श्वसन जड़ें अवस्तम्भ प्रकार की होती हैं एवं अद्भुत दिखती हैं.

LEAST CONCERN LC | २०-३० मी. | मई-सितम्बर

७. समुद्री राई (राइजोफोरा मुक्रोनाटा)

ये मुहाने के उल्टे प्रवाह में किंतु समुद्र के निकट उगने वाले ये मध्यवर्ती मैंग्रोव हैं. यह शीघ्र बढ़ने वाली सख्त प्रजाति है. इनका उपयोग लकड़ी, ईंधन, चारा एवं कोयले हेतु होता है. इनकी श्वसन जड़ें विशिष्ट अवस्तम्भ प्रकार की होती हैं. इनके फल पेड़ पर रहते हुए ही अंकुरित होते हैं.

LEAST CONCERN LC | ३५ मी. | जुलाई-अक्टूबर

८. चिपी (सोनेरशिया एपेटला)

ये मुहाने के विरुद्ध प्रवाह में उगने वाले समुद्राभिमुख मैंग्रोव हैं. नई ज्वारीय कीचड़युक्त जमीन में सबसे पहले उगनेवाले मैंग्रोव होते हैं. यह शीघ्र बढ़ने वाली सख्त प्रजाति है. इनका उपयोग वृक्षारोपण योजनाओं में, लकड़ी, चारा एवं खाने हेतु के लिए होता है. इनकी शंक्वाकार श्वसन जड़ें होती हैं. फूलों का मधुमक्खियों द्वारा परागण होता है.

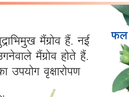

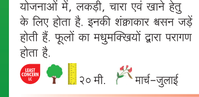

LEAST CONCERN LC | २० मी. | मार्च-जुलाई

झाड़ियाँ

९. हड़कत (अकॅन्थस इलीसिफोलिअस)

यह जलीय पौधा स्थानीय नदी के किनारे अथवा ज्वारीय नहरों के किनारे अथवा मैंग्रोव वनों के निचले दलदली क्षेत्रों में पाए जाते हैं. ये नष्ट हो रहे आवास के सूचक हैं. इनका उपयोग औषधि के लिए होता है. इन में छोटी अवस्तम्भ जड़ें पाई जाती हैं. फूलों का परागण मधुमक्खियों द्वारा होता है.

LEAST CONCERN LC | २ मी. | अप्रैल-जनवरी

आइये, मैंग्रोव के साथियों से मिलते हैं!

10. मेसवाक (साल्वाडोरा पर्सिका)

यह भूमिभिमुख मैंग्रोव हैं. इनका उपयोग प्राकृतिक दातून के रूप में होता है. इनके बीजों के तेल का उपयोग साबुन बनाने में होता है. यह मिस्वाक तितली का खाद्य पौधा है. इनके पके फल पक्षियों को आकृष्ट करते हैं, खाने में मीठे और थोड़े-से मादक होते हैं.

३ मी. | अप्रैल-जनवरी

मैंग्रोवों के समुद्री जीव

१. धारीदार खंडावर (बॅलॅनस)

ये झींगों और केकड़ों से सम्बंधित खपड़ीदार प्राणी हैं. ये तटीय प्रदेशों एवं नदी के मुहानों के चट्टानी किनारों पर निवास करते हैं, जहाँ वे ठोससतहों पर चिपके हुए पाए जाते हैं. जहाजों के निचले भाग को क्षति पहुंचाने वाली यह प्रमुख प्रजाति है. ज्वार के वक्त छोटे समुद्री जीवों को खाते हैं और भाटे के समय खुद को बंद कर लेते हैं.

१.५ सें.मी.

२. निवती (बोलियोफ्थॅल्मस बड्डारटी)

ये मछलियाँ नदी के मुहानों के खारे पानी में और ज्वारीय क्षेत्र के मीठे पानी में रहती हैं. ये अक्सर मैंग्रोवों के कीचड़युक्त क्षेत्रों में पाई जाती हैं. ये बिलों में रहती हैं. ये मछलियाँ हवा में साँस ले सकती हैं एवं इनमें चढ़ने और चलने की क्षमता होती है. नदी के मुहानों पर होने वाले प्रदूषण के कारण यह प्रजाति खतरे में है.

LEAST CONCERN LC | १३.५-२२ सें.मी.

३. सफेद झींगा (फेंनेरोपिनिअस इंडिकस)

ये २- ९० मी. गहरी कीचड़ अथवा रेत की तलहटियों में निवास करते हैं. ये बिल नहीं बनाते और दिन एवं रात में भी सक्रिय होते हैं. युवा झींगे मुहानों में प्रवासित हो जाते हैं, जहाँ वे बड़े होते हैं और फिर प्रजनन हेतु समुद्र की ओर लौटते हैं. मछुआरों के लिए व्यवसाय की दृष्टि से ये एक मुख्य झींगे की प्रजाति है.

१८.४-२२.८ सें.मी.

४. सारंगी केकड़ा (गेलासीमस एन्नुलिपेस)

ये एक छोटा केकड़ा है जिस में नर का एक पंजा बड़ा और रंगीन होता है. कीचड़ युक्त इलाकों में भाटे के समय उन्हें देखा जा सकता है. अपने पंजे को लहराकर वे मादाओं को आकृष्ट करते हैं और अपना क्षेत्र भी स्थापित करते हैं.

१.५-२ सें.मी.

५. बोई (मुगिल सेफालस)

ये नदी के मुहानों एवं नदी के किनारे रहनेवाली दिनचर मछ्ली है. रेत अथवा कीचड़ में पाई जाती हैं जहाँ पर सूक्ष्म प्राणियों को खाती है. खारेपन के विभिन्न स्तरों को सह सकती है. खाद्य रूप में इसे बाजार में बेचा जाता है.

३०-७५ सें.मी.

६. प्रार्थना झींगा (ओरॅटो स्क्विल्ला)

यह उथले समुद्रीय जीवों में सबसे प्रमुख भक्षक है. इनका शरीर चपटा और पैर शिकार के लिए अनुकूलित होते हैं. इन्हें अपना नाम इनके प्रार्थना कीड़े की भाँति भुजाओं और आँखों के कारण मिला है. यह सशक्त पंजों का इस्तेमाल आक्रमण करने, शिकार को काटने और अचेत करने के लिए उपयोग करते हैं. ये शाम एवं सुबह के समय सक्रिय होते हैं.

१०-३८ सें.मी.

७. नीला तैराक केकड़ा (पॉर्टुनुस पेलॅजिकस)

ये केकड़े दलदली क्षेत्रों में १०-५० मी. गहरे रेत एवं रेतीले-कीचड़ वाले उथले पानी में रहते हैं. ये खाने के शौकीन भक्षक होते हैं. शंख, मछली, अन्य छोटे केकड़े, झींगे एवं काई इनका आहार है. इनके अंतिम पैरों की जोड़ी चपटी और चप्पू की तरह होने के कारण ये अति उत्तम तैराक हैं. इन्हें भी खाद्य के रूप में बेचा जाता है.

२० सें.मी.

८. विशाल पंक केकड़ा (स्काइला सेराटा)

ये कीचड़ भरी तलहटी, मैंग्रोव के दलदल एवं नदी के मुहानों पर निवास करते हैं. बहुत गहरे बिल बनाते हैं. समुद्र के तट से करीब ५० कि.मी. दूर अंडे देने के लिए प्रवासन करते हैं. इनका आहार घोंघा और झींगा होते हैं. दिन में यह जमीन के अंदर रहते हैं और सूर्यास्त और रात के समय भोजन हेतु बाहर निकलते हैं. इन्हें खाद्य के रूप में बेचा जाता है.

२५-२८ सें.मी.

९. रक्तिम घोंघा (टेगिल्लारका ग्रॅनोसा)

ये भीतरी सफेद सतह वाली, मोटे आवरण एवं धारियों वाली सीपियाँ हैं. ये अंतर्ज्वारीय क्षेत्र पसंद करती हैं जहाँ ये रेत अथवा कीचड़ में बिल बनाती हैं. इनके शरीर में पाए जाने वाले लाल हेमोग्लोबिन की वजह से इनका नाम पड़ा है. ये आहार के लिए समुद्री तल पर पाए जानेवाले जैविक अपरद पर निर्भर करती हैं.

४-५ सें.मी.

१०. दुर्बीन घोंघा (टेलेस्कोपियम टेलेस्कोपियम)

ये ऊँचे शंक्वाकार आवरण वाले बहुत बड़े घोंघे होते हैं. ये कीचड़युक्त तटों पर स्थित मैंग्रोवों में देखे जा सकते हैं. ये शाकाहारी हैं और मुख्यत: काई इनका आहार है. ये बहुत समय तक जल के बाहर रह सकते हैं. दक्षिण-पूर्वी एशिया के कुछ भागों में खाद्य के रूप में प्रयुक्त होते हैं.

८-१५ सें.मी.

मैंग्रोवों में पाए जाने वाले कीटक और स्तनधारी जीव

१. मिस्वाक तितली (कोलोटिस अमाटा)

यह मैंग्रोव पेड़ों में आमतौर पर देखी जाने वाली तितली है. ये मिस्वाक पर अपने अंडे देती हैं. इनकी इल्लियाँ हरी और उनके पीठ पर सफेद धारियाँ होती हैं. ये झुंड में पत्तियों के निचले हिस्सों को खाते हुए दिखाइ देती हैं.

३.६ मी.मी.

२. मैंग्रोव पतंगा (हय्ब्लिया पुएरा)

इन्हें साग एवं मैंग्रोव पेड़ों के परजीवी माना जाता है. इनकी इल्लियाँ मैंग्रोवों की कई प्रजातियों की पत्तियों को खाती हैं. इल्लियों द्वारा सामूहिक आक्रमण होने पर मैंग्रोव वन, पत्तियों रहित हो जाते हैं.

३-४ सें.मी.

स्तनधारी

१. सियार (कॅनिस ऑरियस इंडिकस)

ये कुत्ते जैसे दिखने वाले भक्षक हैं, पर इनकी पूँछ घनी होती है. इनका रंग धूसर-भूरे के साथ काला और स फेद होता है. मैंग्रोवों में अक्सर सुबह या शाम के समय दिखाई देते हैं. ये अक्सर जोड़ियों में पाए जाते हैं. ये मुख्यत: मांसाहारी होते हैं. ये केकड़ों, मृत मछलियाँ, चूहों, रेंगने वाले जीव, कीटकों एवं फलों का आहार करते हैं.

१०० सें.मी.

२. नेवला (हर्पेस्टेसे वर्डसी)

ये मैंग्रोवों एवं तट के निकट मानवीय बस्तियों में आमतौर पर देखे जाते हैं. ये चूहों, पक्षियों के अंडे और चूजों, सर्पों, छिपकलियों,केकड़ों, मछलियों और कीटकों को खाते हैं. इनमें साँप के जहर की प्रतिरोधक शक्ति होती है.

३६-४५ सें.मी.

३. जंगली सूअर (सुस्क्रोफा क्रिस्टॅटस)

ये बड़े ही अनुकूलनशील और सामूहिक प्राणी होते हैं. ये मादा-नियंत्रित झुंड़ों में रहते हैं. इनके नरों के मुँह में लंबे दाँत और पीठ पर अयाल होता है. मैंग्रोव में पाए जानेवाले फलों, घोंघों, मछलियों, चूहों, पक्षियों के अंड़ों, छिपकलियों, साँपों एवं सड़े माँस को खाते हैं.

८३-९१ सें.मी.

मैंग्रोव मानचित्र

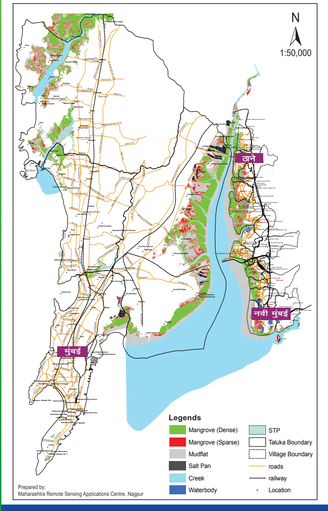

© २०१७

इस मार्गदर्शिका की संकल्पना यूनाइटेड वे मुंबई एवं लेडीबर्ड एंवायरमेंटल कंसल्टिंग एलएलपी द्वारा विकसित और रूपांकित की गयी है. इसे जे. पी.मॉर्गन चेस के सहयोग से जनहित में जारी किया गया है।

साभार:

सम्पादक: आइसॅक केहिमकर

छायाचित्रकार: अरने व्युंश, अहमद मुराद, आशीष राठौड़, बालाजी वी. शिवरामा, बर्नार्ड डूपॉन्ट, बुधक, सर्लिन एंजी, सी.पी.एम. कुट्टी, चंद्रसेखरन अरुमुअम, डी मोर, डेविड कार, देबेन देल्हाय, गुड एसर्स फोटोग्राफी, गुर्विंदर सिंह, इयान वोंग, आइसॅक केहिमकर, जबतन सबा, जेम्स सेंट जॉन, जिंग यिलू, काई यान, जोसफ वॉन्ग, कोशी कोशी, मीना के, नैना गोसावी, एन.सी.सी.ए. अधिकारी, पनींद्र बी.ए., पाओलो टोफोली, प्रशांत अगरवाल, रईस रहमान, रिया टॅन, राइसन थंबूर, रसल कमिंग, सॅम ली, सनलकुमार स्रीवालसन, शुभदा निखरगे, स्टीफन झोझाया, द फोटोमेशन, टोन रल्केन, वी.सी. बलकृष्नन, विवेक सरकार, वी. शुभलक्ष्मी, वॅन हॉन्ग, युवराज गुर्जर.

अनुवादक: समृद्धि पटवर्धन

पूछताछ हेतु सम्पर्क करें
+९१ २२ २४९३७६७६/७९/८०/८१/८२/८३/८५
ईमेल: contact@unitedwaymumbai.org
वेब: www.unitedwaymumbai.org

मैंग्रोव पक्षी

१. टिटहरी *(एक्टीटिस हायपोल्यूकोस)*

ये यूरोप एवं एशिया से आनेवाले प्रवासी पक्षी है जो सबसे पहले आगमन करते हैं और सबसे आखिरी में प्रस्थान करते हैं. इनमें एक विशिष्ट हिलने–डुलने की क्रिया दिखाई देती है, जिसमें सिर और पूँछ निरंतर ऊपर–नीचे हिलते रहते हैं. कीटक,घोंघे,केकड़े, झींगे, मछलियाँ एवं केचुएँ इनका आहार है. आवास नष्ट होने के कारण यह प्रजाति खतरे में है.

LEAST CONCERN LC — २१ सें.मी.

२. नारी *(अर्देया सिनेरिया)*

ये रहवासी पक्षी हैं जो समुद्र तटों के दलदलों में पाए जाते हैं। वयस्कों में प्रजनन के मौसम में चोंच चमकीली गुलाबी पीली हो जाती है। ये मछली, मेंढ़क, छोटे स्तनधारी एवं कीड़े खाते हैं।

LEAST CONCERN LC — ९०–१०० सें.मी.

३. किलकिला *(हॅल्सिओन स्मिरनेनसिस)*

यह मैंग्रोव वनों एवं आसपास के जल निकायों में पाए जाते हैं. कीटक,घोंघा, केकड़े, झींगे, केंचुए, मेंढ़क एवं साँप इनका आहार हैं. यह ऊँचे स्थल पर बैठकर शिकार करते हैं और निगलने से पहले शिकार को चोट मारते हैं. आवास नष्ट होने के कारण यह प्रजाति खतरे में है.

LEAST CONCERN LC — २८ सें.मी.

४. खैरी चील *(हलिआस्तुर इण्डस)*

यह मुख्यत: तटों पर देखे जाने वाले, प्रहारक पक्षी है. उड़ान के समय उनके लाल–भूरे शरीर,सफेद सिर और गोल पूँछ के कारण आसानी से पहचान हो सकती है. ये पक्षी अवसरवादी मुर्दाखोर होते हैं और सड़े–गले माँस, मछली, मेंढक, छोटे साँप एवं चमगादड़ों को खाते हैं.

४८ सें.मी.

५. गजपांव *(हिमांतोपस हिमांतोपस)*

ये असंतुलित जल राशियों में देखे जा सकते है. जलीय कीटक, घोंघा, केकड़ा, झींगा, मेंढ़क, छोटी मछली एवं कभी–कभी बीज इनका आहार होते हैं. आवास नष्ट होने के कारण यह प्रजाति खतरे में है.

LEAST CONCERN LC — २५ सें.मी.

६. काला–सिर गंगाचिल्ली *(लॅरस रीडीबंडस)*

ये सर्दियों में मध्य एशिया से प्रवासन करने वाले प्रवासी पक्षी हैं. इन्हें तटों के इर्द–गिर्द काफी संख्या में देखा जा सकता है. यह बड़ा ही अवसरवादी एवं निर्भीक भक्षक है. ठंड़ियों में इनका सिर सफेद हो जाता है, जबकि गर्मियों में भूरे रंग का होता हैं. मछली, कीड़े–मकौड़े, केचुएँ, आदि इनका आहार हैं. जब वे झुंड में होते हैं तो वे अक्सर शोर मचाते हैं. तेल के रिसाव, बर्ड फ्लू, अंडों के शिकार एवं तटों के प्रदूषण के कारण इनका अस्तित्व खतरे में है.

LEAST CONCERN LC — ४३ सें.मी.

७. पानकौवा *(माइक्रो कार्बोनिगर)*

ये बतख की भाँति दिखने वाले पक्षी है जो तटों पर अक्सर पंख सूखाते दिखाई देते हैं. विशेष रूप से इनका आहार मछली है जिनका शिकार वे पानी में डूबकर करते हैं. ये उत्कृष्ट गोताखोर होते हैं. कभी–कभी झुंड बनाकर एक साथ शिकार करते हैं.

५१ सें.मी.

८. राजहंस *(फोइनिकोप्टेरस रोइअस)*

ये सर्दियों में गुजरात से आने वाले प्रवासी पक्षी हैं, इनकी चोंच अनोखी होती है, जो नीचे की ओर घुमावदार होती है, जिसमें छननी होती है. इनका गुलाबी रंग इन्हें अपने आहार से मिलता है. ये छोटे केकड़ों, झींगों, कृमि एवं सूक्ष्म जीवों को अपना आहार बनाते हैं. आवास नष्ट होने के कारण यह प्रजाति खतरे में है.

LEAST CONCERN LC — १४० सें.मी.

९. शुभ्रकर्ण बुलबुल *(पिक्नोनोटस यूकोटिस)*

यह शुष्क निवास–स्थलों में पाए जानेवाले पक्षी हैं. चेहरे के सफेद पट्टे के कारण इन्हें यह नाम प्राप्त हुआ है. मैंग्रोवों में इन्हें झुंड अथवा जोड़ियों में देखा जा सकता है. ये मेस्वाक के छोटे फलों को अपना आहार बनाते हैं.

२० सें.मी.

१०. कचाटोर *(थ्रेस्किओर्निस मेलानोसीफॅलस)*

यह असामान्य रूप से बड़े पक्षी हैं जिन्हें काले गंजे सिर और लंबी घुमावदार चोंच के कारण पहचाना जा सकता है. ये कोई आवाज नहीं निकालते हैं. ये मेंढकों और उनके डिम्भकीटों, घोंघों, कीड़े–मकौड़ों और कृमियों को खाते हैं. शिकार एवं प्रजनन स्थलों पर बाधाओं एवं निवास–स्थान में कृषि के कारण उनका अस्तित्व खतरे में है.

NEAR THREATENED NT — ७५ सें.मी.

मैंग्रोव के रेंगनेवाले प्राणी

१. गिरगिट *(कॅलोट्स वेर्सीकलर)*

यह पेड़ पर रहने वाली छिपकली हैं जिनके शरीर पर एक विशिष्ट शिखा होती है. कीटक एवं छोटे प्राणि इनका आहार होते हैं. प्रजनन काल में नर का कंठ लाल हो जाता है और अपने क्षेत्र के प्रति सचेत हो जाते है.

३७ सें.मी.

२. धामन *(त्यास म्युकोसस)*

यह चंचल विषहीन साँप है. छिपकलियाँ, छोटे पक्षी और चूहे इनका आहार होते हैं. ये बड़े ही अच्छे आरोही, तैराक एवं गोताखोर होते हैं. ये अपने युद्ध नृत्य के लिए जाने जाते हैं जिसमें नर एक–दूसरे से लिपट जाते हैं और सीधे खड़े होकर आधा शरीर जमीन से ऊपर कर लेते हैं.

२ मी.

३. गोह *(वॅरॅनस बेन्गालेन्सीस)*

यह बहुत बड़ी छिपकली होती है, जिसकी जीभ लम्बी दो नोंकवाली होती है. ये केकड़ों, कीटक, छोटे पक्षियों एवं अंडों को खाती हैं. इनकी चर्बी से अवैध रूप से दवाईयाँ बनाई जाती है. इनकी खाल का भी अवैध व्यापार होता है. अत: इनका अस्तित्व खतरे में है. इसके अलावा ये वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची १ के तहत संरक्षित हैं.

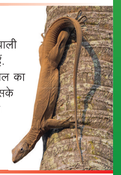

LEAST CONCERN LC — १७५ सें.मी.

४. मासा साँप *(अॅक्रोकोडस ग्रॅन्यूलॅटस)*

यह बड़ा ही अद्भुत विषहीन साँप है. इसकी चमड़ी ढ़ीली और खुरदुरे बनावट की होती है जिसका इस्तेमाल वे अपने शिकार को कस के पकड़ने में करते हैं. ये खाड़ियों, नदी के मुहानों एवं उथले समुद्रों में निवास करते हैं. ये कीचड़ में पाई जाने वाली मछलियों(गोबी मछली, निवती), घोंघा एवं सीपियों को खाते हैं. मादाएं अंडे न देकर शिशुओं को जन्म देती हैं.

६०–१२० सें.मी.

५. पानी का सांप *(सर्बेरस हींकोप्स)*

ये विषहीन साँप हैं जो अपने पूँछ के सहारे मछली का शिकार करते हैं. ये अपनी पूँछ को झटक कर मछली को डराते हैं, फिर उसको अपने सिर की ओर लाकर पकड़ लेते हैं. ये मैंग्रोव की निचली शाखाओं पर चढ़ सकते हैं. मादाएं अंडें ना देकर शिशुओं को जन्म देती हैं. खाल के पूर्व अवैध व्यापार के कारण आज भी संरक्षित हैं.

LEAST CONCERN LC — १२० सें.मी.

मैंग्रोव एवं मानव

मैंग्रोव संकट में क्यों है ?

अब तक विश्व के ३५ % से अधिक मैंग्रोव के वन समाप्त हो चुके हैं एवं भारत में ५०% से अधिक के मैंग्रोव वन नष्ट हो चुके हैं. इसके लिए निम्नलिखित कारक उत्तरदायी हैं :

- खेती, मछुवाही एवं संरचनात्मक उपक्रमों के लिए मैंग्रोव वनों को काटना
- मैंग्रोव वनों से मिलने वाली उपज का आवश्यकता से अधिक एकत्र करना
- पानी के खारेपन में परिवर्तन एवं मिट्टी के कटाव में वृद्धि
- अनुपचारित औद्योगिक मैलापानी की निकासी एवं तेल रिसाव के कारण होने वाला प्रदूषण
- जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्रस्तरों में हुई वृद्धि.

मैंग्रोवों का संरक्षण कैसे करें?

मैंग्रोवों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए एक कानुनी रूपरेखा पहले से ही मौजूद है. आवश्यकता है तो विधायी जनादेशों को लागू करने की. यह है तत्संबंधी सूची:

- भारतीय वन अधिनियम, १९२७ और वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, १९७२
- वन संरक्षण अधिनियम, १९८०
- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, १९८६
- वन विभाग का मैंग्रोव विभाग

मैंग्रोवों के संरक्षण के लिए सरकार और नागरिक निकायों ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं:

- मैंग्रोवों के आश्रय–स्थल का मानचित्रण
- मैंग्रोवों के आश्रय–स्थलों का पुनर्वनरोपण
- संरक्षित मैंग्रोव क्षेत्रों की घोषणा
- मैंग्रोव प्रदर्शन केंद्रों की स्थापना

आप किस प्रकार से सहायता कर सकते हैं?

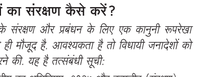

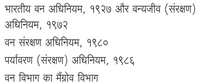

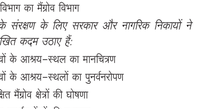

- अपने नजदीकी पुलिस थाने में मैंग्रोव वृक्षों के कटने की रिपोर्ट करें.
- अधिक्रमित भूमि पर बनी इमारतों में कोई मकान ना खरीदें.
- मैंग्रोव के वृक्षारोपण के अभियानों में हिस्सा लें,
- मैंग्रोव से संबंधित अध्ययन पर्यटन में हिस्सा लें.
- विक्रोली एवं ऐरोली में स्थित मैंग्रोव केंद्रों को भेंट दें.

मैंग्रोव हेल्पलाइन (नि:शुल्क): हेलो फॉरेस्ट १९२६

मिशन मैंग्रोव्स का उदेश्य नागरिकों को मैंग्रोव वृक्षारोपण के महत्व पर शिक्षित करना, एक लाख से अधिक मन्ग्रोवों का रखरखाव करना और सार्वजनिक निजी साझेदारी के माध्यम से २० हेक्टेयर की निम्न दर्जे की आर्द्रभूमियों को पुनर्जीवित करना हैं.

बृहन्मुंबई के मैंग्रोव वनों की मार्गदर्शिका

इस अनुपम मार्गदर्शिका में बृहन्मुंबई के मैंग्रोव वनों में पाए जाने वाले ४० वन्यजीव प्रजातियों के बारे में जानकारी दी गयी है ।

के तत्वावधान में: Mission Mangroves — A United Way Mumbai initiative

की पहल: United Way — United Way Mumbai

के सहयोग से: महाराष्ट्र वन विभाग — Mangrove Cell